"प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री विमर्श और उसका स्वरूप"

विनायक लोहानी
(शोधार्थी)
नव नालंदा महाविहार (मानित)
विश्वविद्यालय, नालंदा

स्त्री-विमर्श के संदर्भ में प्रेमचंद के नारी-समस्या प्रधान उपन्यास अपना एक विशिष्ट स्थान रखते हैं, जिनके माध्यम से प्रेमचंद सदियों से सामाजिक रुढ़ियों की भेंट चढ़ती चली आ रही नारी को न्याय दिलाने के लिए, उस पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध जनमत तैयार करने का सराहनीय प्रयास किया है। प्रेमचंद हिन्दी के वह पहले उपन्यासकार हैं, जिन्होंने नारी-समस्या की जटिलता को समझकर समाज के रुढ़िवादी पितृसत्तात्मक ढाँचे को खुलेआम चुनौती देते हुए भारत के उस परम्परागत परिवार व्यवस्था पर प्रहार किया है, जिसके अन्तर्गत नारी पग-पग पर तिरस्कार तथा अपमान के कड़वे घूँट पीने को बाध्य है।

पुरुष-प्रधान समाज में अभिशप्त जीवन जीने पर मजबूर नारी-समाज की विडम्बनाओं के प्रति उनके मन में कितनी करुणा और सहानुभूति थी और उसके जीवन की समस्याओं को सुलझाने में वे किस तन्मयता से संलग्न थे उनके उपन्यास साहित्य के अवलोकन से स्पष्ट है।

सन् १९१८ ईसवी में प्रकाशित 'सेवासदन' नामक उपन्यास प्रेमचंद का पहला उपन्यास है। अपने इस प्रथम उपन्यास में प्रेमचंद ने वेश्या जीवन से सम्बद्ध समस्याओं के चित्रण का प्रयास किया है। 'सेवासदन' की समस्या मध्यवर्ग से संबंधित है। आज की बहुत सी सामाजिक समस्याओं के मूल में अर्थवादी मूल्य काम कर रहा है, अतः देखा जा सकता है कि इन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक प्रश्नों के मूल में आर्थिक समस्या ही है। 'सेवासदन' में वेश्या-जीवन को एक सामाजिक संदर्भ में देखा गया है, वेश्या-जीवन पुरुष के लिए एक लुभावनी चीज रही है, परन्तु यथार्थवादी कलाकार ने इस लुभावनी चीज के नीचे छिपी नारी-जीवन की गहनतम प्रताड़ना, अवमानना को उद्‌घाटित कर उन मूलकारणों पर प्रकाश डाला है, जो हमारे मध्यवर्गीय स्त्री-समाज को वेश्या बनने के लिए विवश कर देते हैं।

आर्थिक विषमता समाज का सबसे बड़ा अभिशाप है, वही अन्य समस्या-सूत्रों को बुनती हुई दीखती है। 'सेवा सदन' में 'सुमन' का दारोगा पिता ईमानदार नहीं रहने पाता क्योंकि उसे 'सुमन' की शादी में दहेज देना है। सुमन-जैसी सुन्दरी शीलवान कन्या की भी शादी नहीं हो सकती सुपात्र के साथ, क्योंकि पिता के पास पैसे नहीं हैं। पैसे क्यों नहीं हैं, क्योंकि पिता ईमानदार है। दहेज देने के लिए पैसे चाहिए। सुमन के पिता कृष्णचन्द्र घूस लेते हुए पकड़े जाते हैं और उनको जेल जाना पड़ता है। उनका कोई भी उच्च मानवीय मूल्य उसका सहायक नहीं होता। उनकी सारी अर्जित श्री ध्वस्त हो जाती है। सुमन एक दरिद्र अपात्र के साथ ब्याही जाती है। अपात्र पति की ताड़ना, संशय के दंश, और कुछ सुमन की मानसिक प्रतिक्रियाओं ने उसे वेश्या बनने को मजबूर किया।

'सेवा सदन' में प्रेमचंद ने पहली बार पति से विद्रोह करने वाली और प्रतिक्रिया में वेश्यावृत्ति अपना लेने वाली स्त्री के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है। 'सेवा सदन' की सुमन को कोई जबरदस्ती वेश्या नहीं बनाता है। वह वेश्या बनकर अपने पति से ही नहीं पूरे समाज से प्रतिशोध लेती है।

'सेवा सदन' में नारी की प्रताड़ना का रुप तब और भयंकर हो उठता है, जब वह अपनी समस्त पवित्रता, सुन्दरता और गुणधर्मिता के बावजूद अपने परिवार वालों के दोषों के कारण ठुकरा दी जाती है। सुमन की बहन शान्ता का विवाह हो रहा है मगर दरवाजे पर से बारात लौट जाती है जब यह मालूम पड़ता है कि वह सुमन की छोटी बहन है, तथा घूसखोरी के अपराध में जेल काटने वाले कृष्णचन्द्र की बेटी है। व्यक्तित्व की इतनी बड़ी अवमानना कितनी भयंकर है, घातक है। समाज की नैतिक शक्ति और चिन्तन क्षमता कितनी गई गुजरी है कि एक ओर तो कृष्णचन्द्र को घूस लेने को, सुमन को वेश्या होने को

मजबूर करती है, दूसरी ओर अपने व्यक्तित्व में अत्यंत सुन्दर और पवित्र शान्ता को, बहन और पिता के संबंधों के नाते त्याज्य और उपेक्षणीय समझती है। असंगतियों, अशक्तियों और जर्जर जीवन मूल्यों से ग्रस्त समाज 'सेवा सदन' उपन्यास में मूर्तिमान हो उठा है और इन सबके मूल में निश्चय ही आर्थिक विषमता एवं विपन्नता ही है।

सन् १९२५ ईसवी में प्रकाशित 'रंगभूमि' एक राष्ट्रीय उपन्यास है। इस उपन्यास में राजनीतिक परिदृश्य के साथ-साथ सामाजिक परिदृश्य को चित्रित किया गया है। उसके अनेक प्रश्न, समस्याएँ और चेतना के आयाम उद्घाटित किए गये हैं। 'सोफिया' और 'सुभागी' के माध्यम से नारी-शोषण की समस्या उठाई गई है। सुभागी निम्नवर्गीय परिवारों में सतायी जाने वाली नारी की प्रतिनिधि है और सोफिया पूँजीवादी मनोवृत्ति के लोगों द्वारा शोषित नारी का प्रतीक है। सोफिया को स्वयं उसका पूँजीवादी बाप अपने उद्योग धन्धों के विकास के लिए साधन बनाना चाहता है, उसकी इच्छा और प्रकृति के प्रतिकूल उसे उस अवांक्षित व्यक्ति के साथ बाँधना चाहता है जो सत्ता का प्रतीक होने के कारण उसको लाभ पहुँचा सकता है, किन्तु नारी शोषण के विरुद्ध आवाज भी उठाई गई है। स्वयं सोफिया अपने पिता के निर्णयों की अवहेलना करके विनय को अपने जीवन-साथी के रुप में वरण करना चाहती है। सुभागी के संदर्भ में 'सूरदास' नारी-शोषण के विरुद्ध आवाज उठाता है।

सन् १९२७ ईसवी में प्रकाशित 'निर्मला' उपन्यास में दहेज और अनमेल विवाह की समस्या उठाई गई है। अर्थाभाव से 'निर्मला' की शादी बूढ़े से कर दी जाती है। हमारे समाज का यह एक जाना पहचाना परिदृश्य है। यह घटना कितनों की जिन्दगी बर्बाद करती है। आर्थिक विषमता सामाजिक विषमता की जड़ है। वह संबंधों और मूल्यों को भी तोड़ती है। बाप बेटे के प्रति ईष्यालु हो जाता है, घर का वातावरण इतना दूषित हो जाता है कि बेटे उद्दंड हो जाते हैं, चोरी करने लगते हैं। घर से भाग खड़े होते हैं, और जान पर जान जाने लगती है। कितनी ही सपनों भरी जिन्दगानियाँ तबाह हो जाती हैं। प्रेमचंद ने इस सामाजिक समस्या के बीच 'निर्मला' को उपस्थित कर उसकी मानसिकता का अच्छा उद्घाटन किया है, साथ ही 'तोताराम' के माध्यम से मध्यवर्गीय व्यक्ति की विसंगतियों का, उनकी कथनी और करनी के बीच के फासले का, उसकी उपहास्यास्पद नकली ताकतों का उद्घाटन किया है।

सन् १९३० ईसवी में प्रकाशित 'गबन' उपन्यास मध्यवर्गीय जीवन यथार्थ को व्यक्त करने वाला सशक्त उपन्यास है। 'गबन' की जालपा में मध्यवर्गीय नारी की युवती-सुलभ आकांक्षाएं-आभूषण-प्रेम, भोग-विलास की प्रवृत्ति, ऊँचे समाज की नारियों से मिलने-जुलने और उनसे स्पर्द्धा करने की इच्छा यानी उपरी चमक-दमक को ही जीवन-मूल्य मान लेने की आसक्ति आदि के साथ नारी की समस्त पीड़ा अभाव, सत्य निष्ठा, निश्चय शक्ति सेवा-त्याग और सहानुभूति हैं। 'जालपा' में आभूषण के प्रति अंध आसक्ति का मूल कारण अशिक्षा है। इसीलिए प्रेमचंद ने 'गबन' के एक पात्र इन्द्रभूषण से कहलवाया है- "जब तक स्त्रियों की शिक्षा का काफी प्रचार न होगा, हमारा कभी उद्धार न होगा।"[१]

सन् १९३२ ईसवी में प्रकाशित प्रेमचंद का 'कर्मभूमि' उपन्यास नारी जागरण का संकेत देता है। कर्मभूमि की सुखदा हरिजनों के 'मन्दिर प्रवेश आन्दोलन' का नेतृत्व करती है, और जेल जाती है। सुखदा के अलावा सकीना बुढ़िया पठानिन, रेणुका देवी, मुन्नी आदि ब्रिटिश सरकार का विरोध करती हुई जेल जाती है। नैना तो जुलूस का नेतृत्व करती हुई शहीद ही हो जाती है। इस तरह प्रेमचंद के उपन्यासों में नारी त्याग और बलिदान की एक और मंजिल पार करती हुई दिखाई पड़ती है।

सन् १९३६ ईसवी में प्रकाशित 'गोदान' प्रेमचंद का ही नहीं हिन्दी उपन्यास साहित्य का श्रेष्ठ यथार्थवादी उपन्यास है। 'गोदान' में प्रेमचंद ने मेहता के व्याख्यानों में नारी की दशा का निरुपण किया है। मेहता जी वीमेंस लीग में भाषण करते हुए कहते हैं- "यह पुरुषों का षड्यन्त्र है। देवियों को ऊँचे शिखर से खींच कर अपने बराबर बनाने के लिए उन पुरुषों का, जो कायर हैं, जिनमें वैवाहिक जीवन का दायित्व संभालने की क्षमता नहीं है, जो स्वछन्द काम क्रीड़ा की तरंगों में साँढ़ों की भांति दूसरों की हरी-भरी खेतों में मुँह डालकर अपनी कुत्सित लालसाओं को तृप्त करना चाहते हैं। वह गृहिणी का आदर्श त्याग कर तितलियों का रंग पकड़ रही है।"[२]

वेश्यावृत्ति जैसे ज्वलन्त समस्या के प्रति भी प्रेमचंद पूर्ण जागरुक थे। 'गोदान' में उनके द्वारा प्रस्तुत किया गया यह निष्कर्ष भी सत्य की सीधी अभिव्यक्ति है- "दुनिया में जब तक दौलत वाले रहेंगे, वेश्याएँ भी रहेगी।"[३]

वैचारिक रुप में प्रेमचंद नारी की सामाजिक स्थिति से नितान्त असन्तुष्ट थे। वे समाज में नारी की सम्मानपूर्ण स्थिति के पक्षधर थे। विधवा विवाह के प्रबल समर्थक ही नहीं थे, बल्कि स्वयं भी उन्होंने एक विधवा से विवाह किया था। 'गोदान' में गोबर और झुनिया तथा सिलिया और मातादीन के विवाह के रुप में उन्होंने विधवा विवाह का ही नहीं, अन्तरजातीय विवाह का भी चित्रण किया। इसमें गोबर और झुनिया के विवाह में तो कोई क्रान्तिकारिता नहीं है, पर सिलिया और मातादीन के विवाह में प्रेमचंद एक सामाजिक क्रान्ति की ओर बढ़ते अवश्य दिखाई देते हैं।

'गोदान' की मालती में नारी जागरण का संकेत प्राप्त होता है। वह देश सेवा और समाज सेवा के लिए विवाह न करने का कठोर व्रत लेती है। हिन्दी के किसी अन्य उपन्यासकार की रचना में भारतीय नारी का यह जागृत रुप नहीं दिखाई पड़ा था।

इस प्रकार प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में पीड़ित नारी के दर्द को सबसे अधिक उभारा है। यह लेखक की मानवतावादी दृष्टि तो है ही साथ ही साथ यह घोर सत्यवादी दृष्टि भी है। जो पीड़ित वर्ग है वे तो पीड़ित हैं ही, उन पीड़ित वर्गों की नारी स्वयं उनसे भी पीड़ित हैं। इस प्रकार वह दुहरे रुप में पीड़ित है। नारी एक प्रताड़ना से दूसरी में दूसरी से तीसरी में और फिर चौथी, पाँचवी में चलती रहती है। नारी की प्रताड़ना का यह क्रम कभी खत्म नहीं होता। प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में नारी जीवन के इस तीखे सत्य को बेबाक प्रस्तुत किया है।

संदर्भः-

१. गबन - प्रेमचंद, पृष्ठ १०३

२. गोदान - प्रमचंद, पृष्ठ १४५

३. गोदान - प्रेमचंद, पृष्ठ ४२६